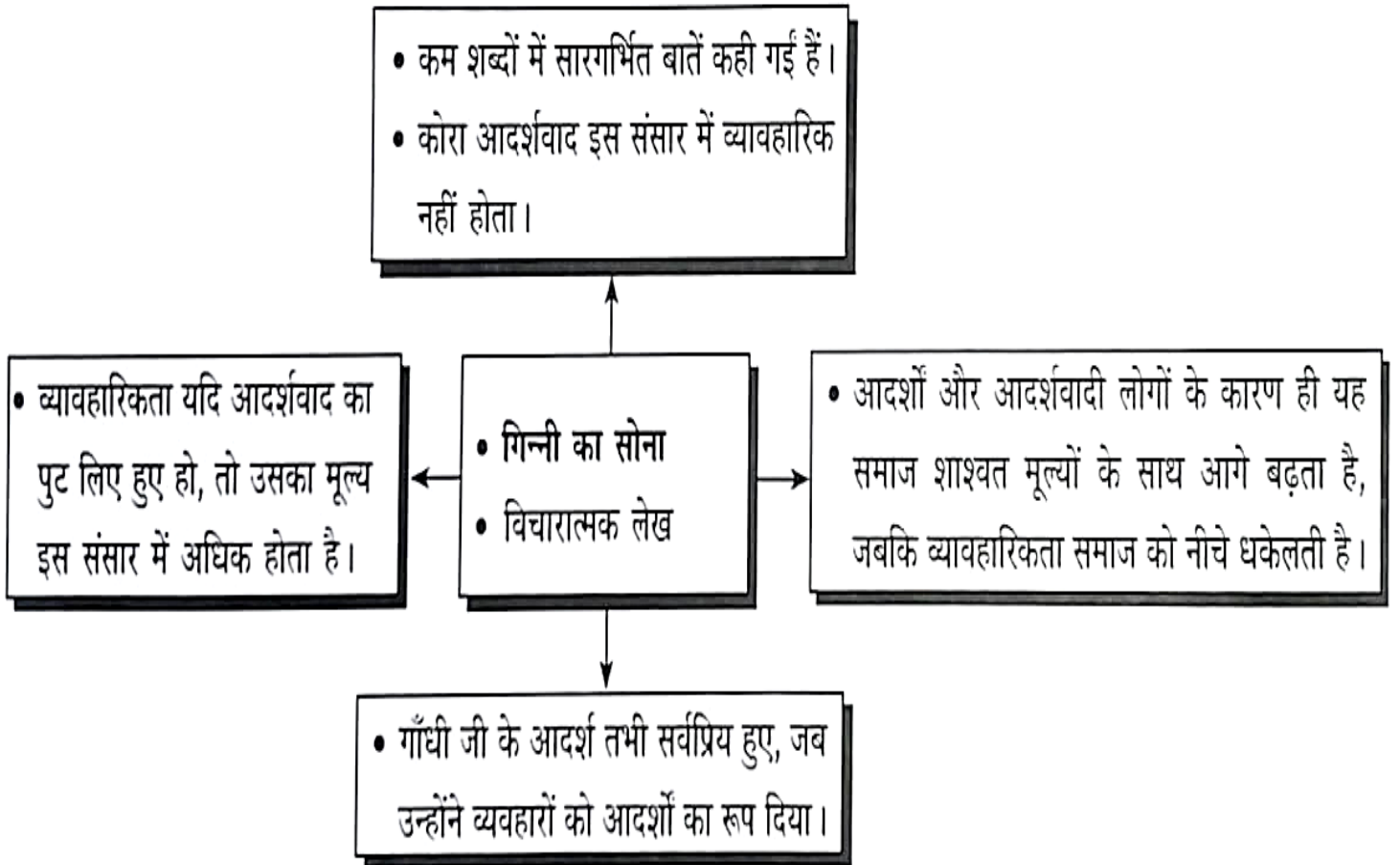


पाठ : १३

पतझर में टूटी पत्तियाँ

STUDY NOTES

MIND-MAP

पाठ : १३

पतझर में टूटी पत्तियाँ

STUDY NOTES

पाठ प्रवेश-

ऐसा माना जाता है कि कम शब्दों में अधिक बात कहना एक कविता का सबसे महत्वपूर्ण गुण होता है। जब कभी इस गुण का प्रयोग कवियों के साथ-साथ लेखक भी करें अर्थात् जब कभी कविताओं के साथ-साथ गद्य में भी इस गुण (कम शब्दों में अधिक बात कहने) का प्रयोग हो, तो उस गद्य को पढ़ने वाले को यह मुहावरा याद आ ही जाता है - 'सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय' अर्थात् सही और सार्थक (जिनका कोई अर्थ हो) शब्दों का प्रयोग करके और निरर्थक (जिनका कहीं कोई अर्थ न हो) शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। आसान शब्दों का प्रयोग करना और कम शब्दों में अधिक शब्दों का अर्थ निकलने वाले वाक्यों का प्रयोग करना बहुत कठिन काम है। फिर भी लेखक इस काम को करते आए हैं। सूक्ति कथाएँ, आगम कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ इसी तरह से लिखी गई कथाएँ और कहानियाँ हैं। यही काम प्रस्तुत पाठ के लेखक रविंद्र केलेकर ने भी किया है। लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं उनमें भी लेखक पढ़ने वालों से उम्मीद कर रहे हैं कि वे उनके द्वारा कहे गए काम शब्दों में अधिक अर्थों को निकालें। ये प्रसंग केवल पढ़ने के ही लिए नहीं हैं, बल्कि एक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा भी देते हैं। पहले प्रसंग (गिन्नी का सोना) जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगों से परिचित करवाता है जो इस संसार को सब के लिए जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। दूसरा प्रसंग (झेन की देन) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्त तम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

संबंधित प्रश्न -

१. कम शब्दों में अधिक बात कहने का प्रयोग होने पर कौन - सा मुहावरा याद आता है?
२. लेखक इस पाठ से क्या प्रेरणा देना चाहते हैं?
३. गिन्नी सोने का अर्थ क्या है?
४. 'झेन की देन' पाठ के द्वारा लेखक कहाँ की बात बताना चाहते हैं?
५. 'झेन की देन' के माध्यम से क्या कहा गया है?

सामान्य उद्देश्य -

व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिकता के मुकाबले आदर्शवादिता अधिक महत्वपूर्ण है। अतः जीवन में अच्छे व उच्च आदर्शों के साथ-साथ सही व्यावहारिकता भी महत्वपूर्ण है।

विशिष्ट उद्देश्य -

- (क). किताबी ज्ञान को व्यावहारिकता के साथ उपयोग करना ही उसका सही उपयोग है।
- (ख). मनुष्य के जीवन में अच्छे आदर्शों का बहुत बड़ा महत्व होता है।
- (ग). वर्तमान ही सत्य है और प्रत्येक व्यक्ति को उसी में जीना चाहिए।

पाठ का सार-

लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए हैं, उनमें पहले प्रसंग (गिन्नी का सोना) जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगों से परिचित करवाता है जो इस संसार को सब के लिए जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। लेखक कहते हैं कि शुद्ध सोने में और सोने के सिक्के में बहुत अधिक फर्क होता है, सोने के सिक्के में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है, जिस कारण अधिक चमक आ जाती है और यह अधिक मजबूत भी होता है। औरतें अकसर उन्हीं सोने के सिक्कों के गहने बनवाती हैं। लेखक कहते हैं कि किसी व्यक्ति का जो उच्च चरित्र होता है वह भी शुद्ध सोने की तरह होता है उसमें कोई मिलावट नहीं होती। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने चरित्र में ताँबा अर्थात् मिलावटी व्यवहार मिला देते हैं, उन्हीं लोगों को सभी लोग व्यावहारिक आदर्शवादी कह कर उनका गुणगान करते हैं। लेखक हम सभी को ये बताना चाहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्णन कभी भी आदर्शों का नहीं होता, बल्कि आपके व्यवहार का होता है। कुछ लोग कहते हैं कि गाँधी जी भी व्यावहारिक आदर्शवादियों में से एक थे। यदि गाँधी जी अपने आदर्शों को महत्व नहीं देते तो पूरा देश उनके साथ हर समय कंधे-से-कंधा मिला कर खड़ा न होता। जो लोग केवल अपने व्यवहार पर ही ध्यान देते हैं, केवल वैज्ञानिक ढंग से ही सोचते हैं, वे व्यवहारवादी लोग कहे जाते हैं और ये लोग हमेशा चौंकाने रहते हैं कि कहीं इनसे कोई ऐसा काम न हो जाए जिसके कारण इनको हानि उठानी पड़े। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शों को सबसे आगे रखने वाले लोगों ने किया है। हमारे समाज में अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगों के कारण ही बच पाए हैं। दूसरा प्रसंग (झेन की देन) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्त तम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं। लेखक ने जब अपने जापानी मित्र से वहाँ की सबसे खतरनाक बीमारी के बारे में पूछा तो उसने कहा कि जापान के लोगों को सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। लेखक के इस मानसिक बीमारी की

वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। यही कारण है कि जापान के लोगों में मानसिक बीमारी फैल गई है। लेखक कहते हैं कि एक शाम को उनका जापानी दोस्त उन्हें चा-नो-यू अर्थात जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। लेखक और उनका मित्र चाय पीने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी। उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्टी का एक पानी भरा हुआ बरतन था। लेखक और उनके मित्र ने उस पानी से हाथ-पाँव धोकर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चाजीन कहा जाता है। उन्हें देखकर वह खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने उन्हें प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए। ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थी। लेखक कहते हैं कि चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता। वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई। लेकिन धीरे-धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ्तार कम होने लगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल बंद ही हो गया है। लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। जो समय अभी चल रहा है वही सच है। और यह समय कभी न खत्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है। लेखक कहते हैं कि जीना किसे कहते यह उनको चाय समारोह वाले दिन मालूम हुआ। जापानियों को ध्यान लगाने की यह परंपरा विरासत में देन में मिली है।